VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

कौमुदीमित्रानंद में प्रतिपादित जीवनोपयोगी शिक्षा

Kinjal Smit Shah

Assistant Prof. (Visiting Faculty)
Prakrit & Pali Department
The School of Languages
Gujarat University
Ahmedabad -380009
Mail I'd – kinjalsmitca@Gmail.Com
Contact No – 7600044288

काव्य शास्त्र में काव्य के छ प्रयोजन बतायें गये है। यश प्राप्ति, अर्थप्राप्ति, व्यवहार ज्ञान, अमंगल नाश, तत्काल अत्यंत आनंद और पत्नी के समान उपदेश.[1] इन छ प्रयोजन में यश प्राप्ति, धन प्राप्ति और अमंगल नाश ये कवि के लिए प्रयोजन सिद्ध होते है और व्यवहार ज्ञान, तत्काल अत्यंत आनंद और पत्नी के समान उपदेश ये तीन पाठक, श्रौता और दर्शको के लिए होते है।

व्यवहार ज्ञान को आधार बनाकर कौमुदी मित्रानंद नामक प्रकरण में जो तत्त्व प्राप्त होते है उनकी चर्चा करना इस लेख का विषय है।

प्रस्तुत प्रकरण 'कौमुदीमित्रानंद' के रचयिता रामचंद्र सूरि है जिनका समय इसा की 12 वीं शताब्दी है। ये कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्य के पट्ट शिष्य थे। ये केवल कवि ही नहीं आचार्य भी थे। गुणचंद्र के साथ मिलकर इन्होंने प्रसिद्ध नाट्य शास्त्रीय ग्रंथ नाट्य दर्पण की रचना की थी। उन्होंने कुल दश रूपकों, पांच नाटक, तीन प्रकरण और नाटिका की रचना की हैं। 'कौमुदी मित्रानंद' 10 अंको का प्रकरण है। दश रूपकों के भेदो में नाटक के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थिति प्रकरण की ही है।

आचार्य रामचंद्र सूरि अपनी इस कृति का प्रारंभ भगवान् ऋषभदेव की स्तुति के साथ करते है। न केवल मङ्गलाचरण में, अपितु इस नाटक में चित्रित अन्य सङ्कटकालीन परिस्थितियों में भी वे भगवान् की शरण ग्रहण करने का निर्देश करते है। यहीं जीवन शिक्षा है, हम जब भी मुश्केली में आयें तब हमें हमारे इष्ट देव को याद करकें किसी भी परिस्थिति में बीना घबरायें आगे बढना चाहिए। यथा –

यः प्राप निवृत्तिं क्लशाननुभूय भवार्णवे।
तस्मै विश्वैकमित्राय त्रिधा नाभिभुवे नमः॥[2]

आचार्य रामचंद्र आगे अपने प्रकरण का नायक मित्रानंद के व्यक्तित्व के द्वारा समस्त जन को कैसे गुणो की प्राप्ति करनी चाहिए वो सूचित करते है। नायक मित्रानंद में दयालुता, विनयशीलता, नैतिकता आदि सभी गुण विद्यमान हैं। स्वयं सदैव सङ्कटग्रस्त रहने पर भी उसे अपनी चिंता नही, अपितु वह दूसरों के दुःख के विषय में ही सोचा करते है –

मनस्तु मे सदाऽप्यन्यदुःख सङ्कान्ति दर्पणः।

किसी भी धर्म का मूल परोपकार ही हैं। सभी जीव सुखी होना चाहते हैं। सर्व धर्म यही शीख देते है की सभी जीव के प्रति हम समभाव रखे। हमारा प्रकरण भी हमे सदाचार शिखाता हैं। मित्रानंद सिद्ध को दुःखी देखकर उसका हृदय द्रवित हो उठता है और वह खुद संकट में पडकर भी उसको पाशपाणि के चङ्गुल सें मुक्त करता है। उसकी दृष्टि में परोपकार से बढकर कोई धर्म नहीं है।

परोपकारः क्रियते स्वस्य कल्याणहेतवे।
ततोऽपि यद्यकल्याणं कल्याण तत् पदं परम्॥[3]

मित्रानंद अत्यंत क्षमावान् भी है। पुनः पुनः अपकार की चेष्टा करनेवाले सिद्धाधिनाथ को भी सहज ही में क्षमा कर देता है। जैन धर्म में कहा हैं की क्षमा वीरस्य भूषणम्, अर्थात् क्षमा वीर पुरूषो का गहना है। मकरंद को मारनेवाले धूर्त नरदत्त को प्राणदंड से मुक्त करवा देना भी उसकी क्षमाशीलता का प्रमाण है। मित्रानंद नीति मार्गानुसारी है और विपत्ति में भी नैतिकता का साथ नही छोडना उसका नियम है। नैतिकता के गुण होने से देश और समाज का विकास ज्यादा होता है। यह प्रकरण आज के नव युवा पेढी को यहीं शिखाती है कि नीतिमत्ता को कोई परिस्थिति नही छोडनी चाहिए। आश्रम में अपने स्वागत में कुलपति द्वारा पशुबलि की बात सुनकर वह दुःखी हो जाता है, क्योंकि पशुबलि और नरबलि अत्यंत अनैतिक कर्म है, हमारी वजह से किसी भी पशु और नर की बलि नही होनी चोहिए ऐसी मित्रानंद की स्पष्ट मान्यता है। उसकी दृष्टि मे सभी शास्त्रकार,विद्वान, ऋषिगण पाखंडी हैं जो इसका विधान, समर्पण और पालन करते है। अहिंसा ही परम धर्म है। सभी धर्म की यही मान्यता है की कोई भी जीव की निष्कारण हिंसा करने का हमें कोई हक नहीं हैं। इस प्रकरण कें कर्ता जैन आचार्य है और जैन धर्म का मूळ अहिंसा है। रामचंद्र सूरिने तांत्रिक साधनाओं में होने वाली नरबलि आदि का क्रूरकर्म और एसे शास्त्रको क्रुरशास्त्र कहकर अपने अहिंसक जैन दृष्टिकोण का पोषण भी किया है। इसी प्रकार उन्होंने भोगवादी जीवनदृष्टिकी भी समालोचना की है।

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत कृति में तीन देव मन्दिरों का चित्रण किया गया है – एक भगवान् ऋषभदेव का, दूसरा कामदेव का और तीसरा कात्यायनी देवी का। आचार्य ने बडी ही कुशलता के साथ कात्यायनी देवी के मन्दिर की बीभत्सता का, कामदेव के मन्दिर की सौन्दर्य का और ऋषभदेव के मन्दिर की शान्ति का चित्रण किया हैं।

(1) कात्यायनी देवी के मन्दिर का स्वरूप

केतुस्तम्भविलम्बिमुण्डमभितः सान्द्रान्त्रमालाञ्चित
द्वारं शोणितपङ्किलाङ्गणमदन्मार्जारिभीष्मान्तरम्।
गोपुच्छोत्थितदीपमश्मकुहरक्रोडप्रलुप्तोल्वण-
व्यालं दर्दुरदाहधूमविधुरं कात्यायनीमन्दिरम्॥[4]

(2) कात्यायनी देवी का स्वरूप

नेत्र-श्रोत्र-वरोष्ठ-बाहु-चरण-घ्राणादिभिः प्राणिनां,
मन्त्रैः क्लृप्तबलिर्वसारसकृतस्नानाऽन्त्रमालार्चिता।

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

कण्ठस्थोरगलिह्यमानबहलप्लीहाङ्गरागा गल-
द्रक्ताSSद्रार्द्रानरेन्द्रकृत्तिरसनोत्तंसा मृडानी पुरः॥[5]

भगवती कात्यायनी का यह मन्दिर एसा है जिसके ध्वज-स्तम्भ के चारों तरफ (बलिपशु के) मुण्ड लटक रहे हैं, द्वार (बलि दिये गये पशुओं की खून से सनी हुई अतएव) चिपचिपी आँतडियों की माला से सुशोभित है और आन्तरिक भाग खून के कीचड से परिपूर्ण आँगन में मस्ती से घूमने वाली बिल्लियों के कारण अत्यंत भयङ्कर है। इस मन्दिर के दीपस्तम्भों पर गोपुच्छाकार लौ वाले दीपक जल रहे हैं, पत्थरों(से बनी दीवारों) के छिद्रों में विषैले साँप छिपे हुए हैं और नगाडों को तपोने हेतु जलायी गयी आग के धुएँ से यह मलिन हो गया है। कात्यायनी देवी के स्वरूप का चित्रण करते हुए आगे लिखतें हैं - कात्यायनी देवी सामने दिखाई पड रही हैं। इन्हें पशुओं के नेत्र,श्रोत्र,प्रशस्त ओष्ठ,भुजा,घ्राण आदि अङ्ग मंत्रोच्चारपुर्वक बलिरूप में समर्पित हैं, ये चर्बी के रस से गीली आँतडियों की माला से सुशोभित हैं, इनके शरीर पर तिल्लियों(प्लीहा) का अत्यधिक अङ्गराग जिन्हें गले में लिपटे हुए साँप चाट रहे हैं, लगा हुआ है और ये टपकाते हुए रक्त से अत्यंत गीले गजचर्म की करधनी रूपी आभूषण से सुशोभित हैं।

- कामदेव के मन्दिर का स्वरूप

स्फूर्जद्यावकपङ्कसङ्कमलसम्मध्यं जपासोदरै-
दूर्ष्यैः क्लृप्तपताकमाम्रकिसलैस्ताम्रीभवत्तोरणम्।
कौसुम्भैर्घटितावचूलमभितो मत्तालिभिर्दामभिः,
सिन्दूरारुणिताङ्गणं गृहमिदं देवस्य चेतोभुवः॥[6]

यह भगवान् कामदेव का मन्दिर है, जिसका आन्तरिक भाग चमकीले महावर के रस के प्रसार से चमकीला हो गया है, जिसके शिखर पर जपाकुसुम के समान गाढे लाल रंग की पताका लहरा रही है, तोरणद्वार आम्रपल्लवों से आच्छादित होने के कारण ताम्रवर्ण के प्रतीत हो रही हैं, सब तरफ केसरिया पताकाएँ लटक रहीं हैं, जिन पर उन्मत्त भ्रमरपंक्ति मँडरा रही है और आँगन सिन्दूर से लाल हो रहा है।

ऋषभदेव के मन्दिर का चित्रण

कथमयं सकलदेवताधिचक्रवर्ती नाभिसूनुश्चैत्याभ्यन्तरमलङ्करोति?
(सर्वे प्रणमति)

भद्राम्भोजमृणालिनी, त्रिभुवनावद्यच्छिदाजाह्नवी,
लक्ष्मीयन्त्रणश्रृङ्खला,गुणकलावल्लीसुधासारणिः।
संसारार्णवनौर्विपत्तिलतिकानिस्त्रिंशयष्टिश्चिरं,
दृष्टिर्नाभिसुतस्य नः प्रथयतु श्रेयांसि तेजांसि च॥[8]

ये देवाधिदेव सकल देवों के चक्रवर्ती नाभिपुत्र भगवान् ऋषभदेव मन्दिर के मध्यभाग को किस प्रकार सुशोभित कर रहें हैं?
(सभी प्रणाम करते हैं)

नाभिपुत्र ऋषभदेव के दर्शन, जो कल्याणस्वरूप कमलों के लिए सरोवरतुल्य, तीनों लोकों के पाप को नष्ट करने के लिए गङ्गासदृश, लक्ष्मी को नियन्त्रित रखने के लिए बेडी के समान, गुण और कलाओं के प्रसाररूपी अमृत के लिए प्रवाहस्वरूप, संसाररूपी समुद्र को पार करने के लिए नौकासदृश और विपत्तिलत्ता के लिए खड्गस्वरूप हैं, हमारे लिए मङ्गलकारक और बलदायक हों।

प्रस्तुत कृति में नरबलि, पशुबलि की समर्थक तान्त्रिक कर्मकांडों का चित्रण अनेक स्थलों पर हुआ है, फिर भी रामचन्द्रसूरि ने एक भी जगह पर न तो उनका अनुमोदन किया है और न तो उनके द्वारा उपलब्ध सिद्धि का चित्रण ही किया है, जिससे जनसामान्य की उनके प्रति आस्था उत्पन्न हो। कृति के प्रारंभ में ब्रह्मा जी की कामवृत्ति का चित्रण करते हुए लिखते हैं –

एतां निसर्गसुभगां विरचय्य वेधाः
शङ्के स्वयं स भगवानभिलाषुकोऽभूत्।[9]

ऐसा प्रतीत होता है कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा इस निसर्गसुन्दरी की रचना करके स्वयं इसमें अनुरक्त हो गए। इन संकेतों से यह स्पष्ट है कि आचार्य रामचंद्रसूरि ब्रह्मचर्यमूलक जीवनदृष्टि को प्रधानता देते हैं। कौमुदीमित्रानन्द में प्रसङ्गानुकूल नारी के शारीरिक सौन्दर्य का चित्रण हुआ है,उसमें श्रृङ्गार की झलक भी दिखाई देती है, नाटक और प्रकरण के मुख्य रस में एक श्रृङ्गार रस है। फिर भी श्रृङ्गार रस के सारे वर्णन संयत और जैन श्रमण की मर्यादा के अनुकूल हैं। नायिका कौमुदी के पति के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं नायक मित्रानंद की परोपकारीता, नितीमत्ता, धर्मभीरुता आदि ऐसे गुण हैं – जिससे यह सिद्ध हो जाता है रामचंद्रसूरि ने प्रस्तुत कृति में जीवन-मूल्यों के प्रति पूर्ण निष्ठा अभिव्यक्त की है।

संदर्भ सूचि

1. काव्य प्रकाश , 1।2 काव्यं यशसेSर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षयते। सद्यः परनिवृर्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥
2. कौमुदीमित्रानंदरूपकम् पृ. 1
3. वही, 2-13, पृ.37
4. वही, 4-12, पृ.67
5. वही, 4-13, पृ.68
6. वही, 10-6, पृ.177-78
7. वही, 8-5, पृ.138
8. वही, 1-13, पृ.8

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

9. काव्यप्रकाश-मम्मट आचार्य विश्वेश्वर सं. डो. नरेन्द्र.एम.ए, डी.लिट् प्र. ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी- 1960
10. धनंजय- दशरूपकम् प्र.चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी- 1976
11. अलंकार सर्वस्वम्-रूय्यक सं.डो.रामचंद्र द्विवेदी प्र. मोतीलाल- बनारसी धाम-1965
12. कौमुदीमित्रानंदरूपकम्, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड, करौंदी, वाराणसी-5
13. विश्वनाथ- साहित्य दर्पण प्र. चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी- 1976

http://vidyajournal.org